

बिंदु का वह वैशिष्ट्य जो संहति/विद्युत इत्यादि की इकाई मात्र को अनंत से उस बिंदु तक लाने में किए गए कार्य द्वारा सूचित होता है।

विभवशाली/विभवी वि./पुं. (तत्.) 1. विभव से युक्त, विभव वाला 2. ऐश्वर्यशाली, वैभवशाली 3. धनी, अमीर 4. महिमायुक्त 5. शक्तिशाली, प्रताप वाला।

विभा स्त्री. (तत्.) 1. दीप्ति, कांति, प्रभा 2. सौन्दर्य, शोभा, छवि 3. रश्मि, किरण, प्रकाश।

विभाकर वि. (तत्.) प्रकाश देने वाला, फैलाने वाला पुं. 1. सूर्य 2. अग्नि, आग 3. चन्द्रमा 4. राजा।

विभाग पुं. (तत्.) 1. बाँटने की क्रिया या भाव, विभाजन, बँटवारा, अंश, हिस्सा, भाग खंड 2. पुस्तक का प्रकरण, अभ्यास 3. सुविधा या प्रबंध की दृष्टि से कार्य का अलग-अलग किया हुआ क्षेत्र, महकमा 4. कार्य संचालन की सुविधा के लिए किसी कार्यक्षेत्र के कई छोटे-छोटे हिस्सों/भागों में से एक 5. किसी विशेष कार्य को अलग और निश्चित किया हुआ कोई अंश, खंड क्षेत्र आदि।

विभागाध्यक्ष पुं. (तत्.) किसी विभाग/कार्यक्षेत्र/महकमे का अध्यक्ष/प्रधान/मुख्याधिकारी।

विभागी वि. (तत्.) 1. भागीदार, हिस्सेदार 2. विभागीय।

विभागीय वि. (तत्.) विभाग में होने वाला, विभाग से संबंधित।

विभाजक वि. (तत्.) विभाग या टुकड़े या खंड करने वाला, बाँटने वाला।

विभाजन पुं. (तत्.) 1. अलग-अलग भागों या हिस्सों में बाँटने की क्रिया या भाव, विभाग करना, बँटवारा 2. थोड़ा-थोड़ा करके लोगों को देना या बाँटना, तकसीम 3. लोगों में बाँटने के लिए आवश्यकता, उपयोगिता, उत्तरदायित्व भार आदि के विचार से किसी वस्तु के अलग-अलग अंश या विभाग करना 4. धन-संपत्ति आदि का उसके स्वामियों में आपस में बँटवारा।

विभाज्य वि. (तत्.) 1. जिसका विभाजन/बँटवारा हो सके या होने वाला हो 2. बाँटे जाने योग्य 3.

तोड़ा या सकने योग्य, खंडनीय, विभेद्य 4. वह संख्या, राशि जिसे किसी संख्या या राशि से भाग दिया जाए जैसे- 5 से 15 को भाग देने पर विभाजक 5 और 15 विभाज्य है।

विभात पुं. (तत्.) प्रातः, प्रभात, सवेरा, तड़का।

विभाति स्त्री. (तत्.) शोभा, सुंदरता।

विभाना अ.क्रि. (तत्.) 1. चमकना 2. शोभित होना सं.क्रि. 1. चमकाना 2. शोभित करना।

विभारना क्रि. (तत्.) चमकना।

विभाव पुं. (तत्.) साहि. रस विधान में भाव का उद्बोधक मन को किसी विशेष परिस्थिति में पहुँचाने वाली अवस्था विशेष।

विभावन पुं. (तत्.) 1. कल्पना 2. विवेक, विचार 3. वाद-विवाद 4. परीक्षण 5. चिंतन 6. अनुभूति काव्य. काव्य, नाटक आदि के पात्र के साथ पाठक/श्रोता/दर्शक के तादात्म्य की स्थिति, साधारणीकरण।

विभावना स्त्री. (तत्.) काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या किसी अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या प्रतिबंध होने पर भी कार्य की सिद्धि दिखलाई जाती है।

विभावनीय वि. (तत्.) 1. जिसकी विभावना की जा सके 2. कल्पनीय, चिंतनीय, अनुभूति के योग्य या परीक्षणीय।

विभावरी स्त्री. (तत्.) 1. रात 2. हल्दी 3. कुट्टनी, वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री, मुखरा स्त्री उदा. बीती विभावरी, जागरी- 'लहर' प्रसाद ।

विभावरीश पुं. (तत्.) रात्रि का स्वामी, चंद्रमा।

विभावसु पुं. (तत्.) 1. सूर्य 2 अग्नि 3. चंद्रमा।

विभावित वि. (तत्.) 1. जो स्पष्ट दिखे, प्रकट 2. जाना, समझा हुआ 3. जिसका चिंतन किया गया हो 4. विचारित, विवेचित 5. बतलाया हुआ, सूचित 6. देखा हुआ, दृष्ट 7. सिद्ध किया हुआ, स्थापित।

विभावी वि. (तत्.) 1. भाव/भावों को उदय करने वाला 2. उदित भावों/भाव को उद्दीप्त करने वाला 3. प्रकट करने वाला 4. शक्तिशाली।